14

चिन्ता न करने के चार और कारण

(मत्ती 6:30-34)

चिन्ता एक सार्वभौमिक दुख है। यदि मैं अपने पाठकों से पूछूं कि यदि उन्होंने कभी चिन्ता की है तो हाथ खड़े करें, तो संसार भर के सब लोग हाथ उठा देंगे।[1] हैरल्ड हेज़लिप्प ने यह उदाहरण दिया है:

> ... गर्ट्रूड नामक एक प्यारी छोटी लड़की जन्म से अन्धी थी। ... एक ऑपरेशन से देखने की योग्यता पाने पर, उसे दो बातों ने तुरन्त प्रभावित कर दिया: प्राकृति उसकी कल्पना से कहीं अधिक सुन्दर और रंगदार थी, और लोगों के चेहरे उसकी उम्मीद से कहीं अधिक उदास थे।[2]

हम सब चिन्ता करने के दोषी हैं, पर हम इसका क्या कर सकते हैं ? पिछले पाठ के परिचय में मैंने सुझाव दिया था कि मत्ती 6:25-34 कम से कम सात कारण बताता है कि हमें चिन्ता क्यों नहीं करनी चाहिए। हम ने उन में से तीन कारणों को देख लिया है। हमें चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि ...

> मसीह के अनुयायियों के लिए चिन्ता *अनुपयुक्त* है।
> परमेश्वर का बालक होने के साथ चिन्ता *असंगत* है।
> चिन्ता *अप्रभावकारी* है। न केवल यह भलाई को उत्पन्न करने के योग्य है बल्कि वास्तव में यह हमारे स्वास्थ के लिए, शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप से हानिकारक हो सकती है।

चार और कारणों पर ध्यान देते हुए कि हमें चिन्ता क्यों नहीं करनी चाहिए हम अपने अध्ययन को वहीं से आगे बढ़ाते हैं जहां से हमने इसे समाप्त किया था।

चिन्ता अपमानजनक है! (6:31, 32)

कोई स्वर्गीय पिता नहीं ?

पिछला पाठ हमें आयत 30 के पहले भाग में ले गया था। अभी के लिए हम उस आयत के अन्तिम भाग को छोड़कर यह ध्यान देते हुए कि चिन्ता *अपमानजनक* है यानी यह परमेश्वर का अपमान करना है, अगली आयतों में बढ़ेंगे। चिन्ता का अर्थ है कि हमारा कोई स्वर्गीय पिता नहीं है। आयत 31 और 32 आयतों में यीशु ने कहा,

> इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या

पहिनेंगे; क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज[3] में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए।

जब आप अन्यजाति शब्द पढ़ते हैं तो ऐसा सोचने की कोशिश करें जैसे आप यहूदी हों जो यीशु के यह उपदेश दिए जाने के समय वहां था। ''अन्यजाति'' *जातीय* भिन्नता से बढ़कर *धार्मिक* अन्तर था।[4] अधिकतर अन्यजाति सच्चे परमेश्वर में विश्वास नहीं रखते थे।[5] प्रेमी स्वर्गीय पिता का कोई ज्ञान न होने और उसके साथ कोई सम्बन्ध न होने के कारण ये गैर यहूदी लोग, अपना समय और ऊर्जा खाना और पीना और वस्त्र की तलाश में लगाते थे। वे चिन्ता करते और पसीना बहाते थे और ऐसे मामलों पर खोई हुई भेड़ें थे; वे सांसारिक वस्तुओं का पीछा करते हुए अपने आपको बेहाल कर लेते थे।

स्वर्ग में एक प्रेमी पिता!

यीशु ने कहा कि आपको और मुझे ऐसा नहीं होना चाहिए। आखिर उसने कहा कि ''तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सभी चीज़ों की जरूरत है'' (तुलना करें आयतें 7, 8)। कालान्तर में कुछ चर्च बिल्डिंगों में परमेश्वर की सब कुछ देखने वाली आंख को दर्शाते हुए एक दीवार पर एक बड़ी सी आंख बनी होती थी (देखें अय्यूब 34:21)।[6] मैंने बुज़ुर्गों से सुना है कि वह विशाल, पेंट की हुई पुतली उन्हें बचपन में कैसे भयभीत करती थी। परन्तु जो व्यक्ति प्रभु से प्रेम करता है और उसकी इच्छा को पूरी करने की कोशिश करता है उसके लिए परमेश्वर के सब कुछ देखने और सब कुछ जानने की बात भयभीत करने वाली नहीं बल्कि तसल्ली देने वाली है। हमारा एक प्रेम पिता है जो हमारी आवश्यकताओं को देखता है और जो उन आावश्यकताओं को पूरा करेगा। पतरस ने लिखा है, ''परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। और *अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है*'' (1 पतरस 5:6, 7)।

चिन्ता अनुचित है! (6:33)

आज्ञा

एक और कारण कि हमें चिन्ता इसलिए नहीं करनी चाहिए क्यों चिन्ता *अनुचित* है। यह इस बात का संकेत देता है कि हम ने अपने जीवनों में गलत बात पर ज़ोर दिया है। यीशु ने कहा था कि जो बात हमें नहीं करनी चाहिए वह यह है कि हम खाने और कपड़े को उनमत्ता से न ढूंढें। आयत 33 में वह में बताने के लिए कि हमें क्या ढूंढ़ना चाहिए, आगे बढ़ गया: ''इसलिये पहिले तुम परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।''

''राज्य'' और ''धर्म'' दोनों शब्दों का इस्तेमाल इस उपदेश में पहले कई बार हुआ है।[7] ''धर्म'' शब्द के सम्बन्ध में यीशु के यहूदी स्रोताओं में सम्भवतया पुराने नियम में प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा का राज यानी वह राज्य लगा होगा जिसकी वे सदियों से राह देख रहे थे, यानी वह राज्य जिसके लिए यीशु ने कहा, कि अन्तत: वह ''निकट आया है'' (4:17)। यह राज्य मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन स्थापित हो गया

था। तभी से इसे आमतौर पर ''कलीसिया'' शब्द से जाना जाता है।[8] सदियों प्रचारकों ने मसीही लोगों को अपने सोच और योजना में प्रभु की कलीसिया को पहला स्थान देने के लिए मत्ती 6:33 का इस्तेमाल बिल्कुल सही किया है।

परन्तु यह न भूलें कि ''राज्य'' शब्द का मूल अर्थ लोगों के मनों में परमेश्वर का शासन है। हमारे वचन पाठ में इसे ''धार्मिकता'' से जोड़ा गया है। पहाड़ी उपदेश में ''धर्म'' का अर्थ सही जीवन जीना यानी ऐसे जीना है जैसे हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा है कि हम जीएं। दोनों शब्दों को इकट्ठा रखने पर हमें लोगों के मनों और जीवनों में परमेश्वर के मार्ग को आने देने का दोहरा ज़ोर दिया जाना मिलता है। आयत 6:33 के संदेश को हम इस प्रकार बता सकते हैं: ''प्रभु से जुड़ी हर बात[9] हमारे विचारों और लगावों में पहले स्थान की हक्कदार है।''

मस्कोगी ओक्लाहोमा में वेस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट था, उस समय फलाइट शुबर्ट उस मण्डली के ऐल्डर थे। भाई सुबर्ट का स्कूल के समान का बड़ा सफल कारोबार था। पर वे उसे पहला स्थान नहीं दे पाए। उन्होंने एक डेक्स पर एक तख्ती रखी हुई थी जिस पर लिखा हुआ था परमेश्वर प्रथम, पैंसिलें द्वितीय।

हमें कपड़ों और करियाने की नहीं[10] बल्कि परमेश्वर की खोज करनी आवश्यक थी। यूनानी धर्मशास्त्र में ''खोज'' करना *zeteo* करने की आज्ञा वर्तमानकाल में है जो निरन्तर क्रिया का संकेत देती है। हमारी न रुकने वाली तलाश परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म के लिए होनी आवश्यक है।

प्रतिज्ञा

यदि हम परमेश्वर और परमेश्वर की बातों को अपने जीवों में पहला स्थान देते हैं, तो हमें एक अद्‌भुत प्रतिज्ञा मिली है। यीशु ने कहा कि ''तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी'' (आयत 33ख)। संदर्भ में, ''ये सब वस्तुएं'' खाना, पीना और कपड़ा यानी जीवन की आवश्यकताओं को कहा गया है।[11] याद रखें कि हमारा ''स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुएं आवश्यकता है'' (आयत 32)। *सर्वज्ञ परमेश्वर* होने के कारण वह हर बात जानता है जिसमें हमारी आवश्यकताएं भी हैं। *हमारे प्रेमी* के रूप में वह हमारे साथ साहनुभूति रखता है। *सम्भाल करने वाले पिता* के रूप में वह हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। फिलिप्पी के मसीही लोगों को पौलुस ने बताया कि ''और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी एक घटी को पूरी करेगा'' (फिलिप्पियों 4:19)। पुराने जमाने के दाऊद की तरह हम भी कह सकते हैं, ''यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी'' (भजन संहिता 23:1)।

चिन्ता अव्यावहारिक! (6:34)

कल की चिन्ता न करो

आयत 33 चिन्ता के विषय के समापन पर एक सकारात्मक टिप्पणी के जैसे लगती है पर यीशु ने इस विषय पर एक और बात कहनी थी: ''सो कल के लिए चिन्ता न करो, क्योंकि कल[12]

का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुख[13] बहुत है'' (आयत 34)। यीशु ने काफ़ी कारण बता दिए थे कि हमें चिन्ता क्यों नहीं करनी चाहिए, पर वह लोगों को जानता था। वह जानता था कि कोई आवश्यक कहेगा, ''ठीक है, मैं आज की चिन्ता नहीं करता, पर कल का क्या होगा? कौन जाने कल कौन सी आफ़त आ जाए?'' ए. टी. रोबर्टसन ने कहा है कि ''कल अन्य सभी भयों के [आराम करने] पर चिन्तित मन का अन्तिम आश्रय'' है।[14]

जब मैं मश्कोगी, ओक्लाहोमा में वेस्ट साइड कोंग्रिएशन के साथ काम कर रहा था, उस समय जोय मिलोन ने सुसमाचार की एक शृंखला पर प्रचार किया था। भाई मिलोन, जो अपने मन परिवर्तन से पहले एक पेशवर कार्टूनिस्ट थे, बोलते समय हर प्रवचन को ड्राइंग बनाकर समझाते थे। सप्ताह की एक आराधना के बीच उन्होंने घोषणा की कि वह उस सुबह ''दो डाकुओं के बीच क्रूस पर चढ़ाया गया'' पर प्रचार करेंगे। यीशु के दो डाकुओं के बीच क्रूस पर चढ़ाए जाने की बात करते हुए उन्होंने कलवरी पर तीन क्रूसों को दिखाता एक दृश्य बनाया। फिर उन्होंने कहा, ''जिस प्रकार से मसीह दो डाकुओं के बीच क्रूस पर चढ़ाया गया था, वैसे ही हम भी चढ़ाए जाते हैं।'' उन्होंने एक ओर के क्रूस को ''बीता हुआ कल'' और दूसरी ओर के क्रूस को ''आने वाला कल'' नाम दिया। ''बहुतों के लिए,'' उन्होंने कहा, ''बीता हुआ कल और आने वाला कल समय, विचार और ऊर्जा के डाकू हैं।''

हमारी अधिकतर चिन्ता उन मूर्खतापूर्ण कार्यों पर होती है जो हम ने अतीत में किए होते हैं या भविष्य की उन अनुमानित गम्भीर समस्याओं पर। अतीत की चिन्ता करने के सम्बन्ध में पौलुस ने एक सकारात्मक उदाहरण दिया: ''... जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल करख आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ...'' (फिलिप्पियों 3:13, 14)। मत्ती 6:34 में यीशु ने भविष्य की चिन्ता करने को निरुत्साहित किया।

मैं फिर ज़ोर देना चाहता हूं कि यीशु की बातें को भविष्य की योजना बनाने से रोकती नहीं हैं: अपने बुढ़ापे के लिए उपाय करना या आपको कुछ हो जाने पर आपके परिवार की देखभाल करने योजना जैसी बातें। परन्तु सब कुछ कर लेने पर आप भविष्य के लिए तैयारी कर सकते हैं, इसे परमेश्वर के हाथ में दे दें और इसकी चिन्ता न करें।

बहुत साल पहले मैंने एक कहानी सुनी थी जो मुझे याद रही। एक बूढ़ा आदमी किसी जवान से मिलता है जो बड़ा परेशान दिखाई दे रहा है। ''क्या हुआ?'' बूढ़े आदमी ने पूछा, और जवान ने उसे बताया। बूढ़े आदमी ने पूछा, ''इसका जो कुछ हो सकता था क्या तुम ने किया?'' ''हां,'' जवान ने कहा और जो जो उसने किया था वह उसने बता दिया। ''तुम्हें *पक्का* यकीन है कि तुम जो कुछ कर सकते थे वह तुमने किया?'' बूढ़े आदमी ने पूछा। ''हां,'' जवाने कहा, ''मुझे यकीन है।'' ''तो,'' बूढ़े आदमी ने कहा, ''अब तुम और कुछ नहीं कर सकते। अब तुम्हें यह मामला परमेश्वर के हाथों में देना होगा।'' कभी कभी जब मैं अपने आपको इस या उस स्थिति पर चिन्ता करते हुए पाता हूं, तो मैं रुककर अपने आप से पूछता हूं, ''इस समस्या के समाधान के लिए मैं जो कुछ कर सकता था क्या मैंने सब किया है?'' मैं अपने मन में एक एक बात को याद करता हूं। संतुष्ट हो जाने के बाद कि मैं जो कुछ कर सकता हूं वह मैंने किया है, मैं अपने आप से कहता हूं, ''अब मुझे इसे परमेश्वर के हाथ में दे देना होगा।''

छठा कारण कि हमें चिन्ता नहीं करनी चाहिए यह है कि चिन्ता *अव्यावहारिक* है। यह

अव्यावहारिक है क्योंकि जो बात हमें चिन्तित करती है हो सकता है कि वह कभी हो ही न। ''स्वाभाविक जन्म से चिन्ता करने वाला'' होने के नाते मैं इस बात की पुष्टि कर सकता हूं कि ऐसा ही है। यहूदियों में एक कहावत थी: ''कल की बुराइयों की चिन्ता न करो, क्योंकि तुम्हें नहीं मालूम कि आज आपको क्या मिलेगा। कल शायद आप जीवित न हों, और आपने उस संसार की चिन्ता ले ली होगी जो आपका होगा नहीं।''[15] यदि जिस बात की आप चिन्ता करते हैं वह हो भी जाए तो भी चिन्ता करने से उस समस्या से निपटने में आपको सहायता नहीं मिलेगी। इयन मैकलेरन ने लिखा है कि चिन्ता ''दुख के कल को कम नहीं करती बल्कि यह आज की अपनी शक्ति को कम कर देती है। यह आपको बुराई से बचाती नहीं बल्कि उसके आने पर आपको इसका सामना करने के अयोग्य बना देती है।''[16]

आज ही की चिन्ता करो

यदि हमें कल की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, तो क्या करना चाहिए? हमें आज की ही परवाह करनी चाहिए, परमेश्वर की सहायता के साथ। फिर से यीशु के शब्दों को सुनें: ''सो कल के लिए चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुख बहुत है।'' इस वचन पाठ में डोयल मास्टर ने ''एक बार में एक दिन'' पर नामक संदेश दिया है। उनके प्रवचन में तीन बातें थीं:

1. आपके पास केवल आज है।
2. आपको केवल आज की आवश्यकता है।
3. आप केवल आज से निपट सकते हैं।[17]

एक अर्थ में मत्ती 6:34 में यीशु कह रहा था, ''आज ही की चुनौतियों को सम्भालो और आप कल की चुनौतियों को सम्भालने के लिए तैयार हो जाएगो। एक दिन में एक ही बार जीएं।''[18] डेल कारनेजी की पुस्तक *हाउ टूम स्टाम वरिंग एण्ड स्टाट लिविंग* में उसने पानी बन्द खानों वाली पण्डुबियों का वर्णन किया है। एक खाना पूरी पण्डूबी को बिना डुबोए पानी से भरा जा सकता है। फिर उन्होंने इसकी प्रासंगिकता बनाई: हमें ''दिन बन्द डिब्बों'' में रहने की आवश्यकता है।[19]

एक बार में एक दिन जीना हर हालात में एक अच्छी सलाह है। शराबियों का मूलमत जीवन को एक बार में एक दिन लेना है। शराब छोड़ने वाले लोगों को बताया जाता है, ''यह मत सोचो कि मुझे शेष जीवन भर बिना पीए रहना पड़ेगा। जो अगले बीस या तीस या इससे अधिक वर्ष हो सकते हैं।'' बल्कि उन्हें यह सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ''मुझे *आज* अगले चौबिस घण्टे तक नहीं पीनी है।'' कैंसर का रोगी जानता है कि वह पक्के तौर पर बीमार है, पर वह उसकी चिन्ता करने वाले आगन्तुकों से कहता है, ''मेरे पास खोने के लिए आपकी ही तरह *एक दिन* है।''[20] अब्राहम लिंकन ने कहा था, ''भविष्य की सबसे अच्छी बात यह है कि यह एक बार में एक दिन आती है।''[21]

चिन्ता अव्यावहारिक है। यह हमें कल के लिए तैयार या आज चुनौतियों का सामना करने में सहायता नहीं करती। प्रभु की सहायता से हमें एक समय में एक दिन जीना है। इब्रानियों के

लेखक ने कहा है ''यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है'' (इब्रानियों 13:8)। यीशु ने कल हमारी सहायता की थी, वह आज हमारी सहायता कर रहा है और हम यकीन से कह सकते हैं कि वह आने वाले कल में भी हमारी सहायता करेगा। तो फिर हम चिन्ता क्यों करें ?

चिन्ता बेइमानी है! (6:30)

पहले हम आयत 30 के अन्तिम भाग को छोड़ दिया था, जो चिन्ता पर यीशु की चर्चा में केन्द्र पर है। मैं अपने अध्ययन को समेटने के लिए इसका इस्तेमाल करना चाहता हूं। सातवां कारण कि हमें चिन्ता नहीं करनी चाहिए यह है कि चिन्ता *नास्तिकता* है।[22] होवर्ड फाउलर ने लिखा है कि ''चिन्ता बेइमानी की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है क्योंकि यह इस बात का संकेत है कि चिन्ता करने वाला परमेश्वर में भरोसा नहीं रखता।''[23] रोबर्ट एच. माउंस ने कहा है, ''चिन्ता व्यावहारिक नास्तिवाद है और परमेश्वर का अपमान है।''[24] चिन्ता ''व्यावहारिक बेईमानी'' और ''व्यहारिक नास्तिवाद है'' क्योंकि जब हम चिन्ता कर रहे होते हैं तो हमारा जीवन ऐसे होता है *जैसे* परमेश्वर हो ही न।

विश्वास की कमी

यीशु ने खाने, वस्त्र और अन्य सांसारिक वस्तुओं को जो हमारे जीवनों पर भारी हो सकती हैं, क्या कहा ''हे अल्पविश्वासियो'' (आयत 30ख)। ये शब्द यीशु द्वारा अपने चेलों को दी गई सबसे कठोर डांट और सबसे आम हैं (मत्ती 14:31; देखें 8:26; 16:8; 17:20)। बाद के अवसरों पर, कुछ चेलों को यीशु की सामर्थ में भरोसे की कमी के कारण डांट लगाई गई थी। यहां पर चिन्ता करने वालों को परमेश्वर की सम्भाल और उपाय में भरोसे की कमी के कारण डांटा गया था।

यीशु ने यह नहीं कहा कि उसे सुनने वालों का विश्वास *नहीं* था बल्कि उसने कहा कि उनका *अल्प* विश्वास था। चिन्ता करने वालों को परमेश्वर में कम विश्वास होता है, जिसने कहा है, ''मैं मुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा'' (इब्रानियों 13:5ख)। उनका यीशु में अल्पविश्वास है, जिसने वचन दिया है, ''मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20ख)। उनका पवित्र आत्मा में अल्पविश्वास है, जो ''हमारी दुर्बलता में सहायता करता है'' (रोमियों 8:26)। उनका परमेश्वर के वचन की ''बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाओं'' (2 पतरस 1:4) में अल्पविश्वास है-जैसे कि नीचे दी गई हैं:

> परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं,
> वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे,
> वे उकाबों की नाई उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे,
> चलेंगे और थकित न होंगे (यशायाह 40:31)।

> हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो। क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ

हलका है (मत्ती 11:28-30)।

> ... जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी पियासा न होगा (यूहन्ना 6:35; तुलना यूहन्ना 4:14)।

हमारे वचन पाठ में परमेश्वर की बड़ी प्रतिज्ञाओं में से एक यह है:

> इसलिये पहिले तुम परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं [जीवन की आवश्यकताएं] भी तुम्हें मिल जाएंगी (आयत 33)।

हम चिन्ता को ''गहरा लगाव'' नाम दे सकते हैं। हम इसे सजाकर इसे जहां तक हो सके आकर्षक बना सकते हैं। परन्तु चिन्ता तो चिन्ता ही रहेगी और हम चिन्ता इसलिए करते हैं क्योंकि हमारा विश्वास कम है। विश्वास और चिन्ता एक ही मन में नहीं रह सकते। जॉर्ज मिलर ने कहा है, ''चिन्ता का आरम्भ विश्वास का अन्त है। सच्चे विश्वास का आरम्भ चिन्ता का आरम्भ है।''[25]

विश्वास को बनाना

हम दो प्रमुख ढंगों से अपने विश्वास का बढ़ा सकते हैं। पहला हमें अपने मनों और हृदयों को परमेश्वर के *वचन* के साथ मिलाना होगा। रोमियों 10:17 में पौलुस ने कहा, ''विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' दूसरा, हमें *संसार* में परमेश्वर के उपाय के अनुसार देखभाल के लिए अपनी आंखों और अपने मनों को खोलना होगा। ''आकाश के पक्षियों को देखो,'' यीशु ने कहा, ''जंगली सोसनों पर ध्यान करो'' (मत्ती 6:26, 28)। पूरी पृथ्वी को परमेश्वर द्वारा सम्भाले जाने को देखें (मत्ती 5:45)। फिर देखें कि परमेश्वर ने आपको कैसे सम्भाला है (देखें रोमियों 8:28)।

किसी ने कहा है यह दुख की बात है कि जब लोगों को इतना विश्वास है कि वे मसीही बन सकते हैं पर उन्हें इतना विश्वास नहीं है कि वह चिन्ता न करें। परमेश्वर हम सब की सहायता करे।

सारांश

हम चिन्ता क्यों न करें? इस और पिछले पाठ में हमने निम्न कारण लिए हैं। हमें चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि चिन्ता है ...

अनुपयुक्त और अक्षम्य,
असंगत,
प्रभावकारी और हानिकारक,
अपमानजनक,
अनुपयुक्त,
अव्यावहारिक,
बेईमानी।

एक बार फिर, यीशु के उत्कृष्ट उपदेश ने मेरी कमियां उजागर कर दी हैं, ''मैं तो जन्म से चिन्ता करने वाला हूं।'' मुझे अपने दिन, अपने सप्ताह, अपने वर्ष, अपने जीवन की योजना बनाना अच्छा लगता है। योजना बनाने में कोई बुराई नहीं है; पर योजना बनाने के बाद मैं उन की चिन्ता करने लगता हूं: ''ये होगा या वह होगा? यदि मेरी योजना के अनुसार न हुआ तो क्या होगा?'' मुझे परमेश्वर के हाथों में मामले देना कठिन लगता है। पुराने समय के निराश पिता की तरह मैं पुकार उठता हूं, ''मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर'' (मरकुस 9:24)। मेरे लिए प्रार्थना करें और मैं आपके लिए प्रार्थना करूंगा।

टिप्पणियां

[1]*ट्रुथ फॉर टुडे* 140 से अधिक देशों में विभिन्न भाषाओं में स्थानीय प्रचारकों तथा शिक्षकों को निःशुल्क भेजा जाता है। [2]हेरल्ड हेज़लिप, *डिसाइपलशिप,* दि टवंट्यिथ सेंचुरी सरमन सीरीज़ (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिसर्च प्रैस, 1977), 63. [3]''खोज में रहते'' (*epizeteo*) ''ढूंढ़ना'' का एक मज़बूत रूप है: (*zeteo,* ''ढूंढ़ना'') को उपसर्ग (*epi* ''के पति'') से गूढ़ अर्थ मिलता है। [4]आर. टी. फ्रांस, *दि गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1985), 141 से लिया गया। [5]AB में यहां ''काफ़िर'' है। [6]जब मैं लड़का था तो हम दोहराए जाने वाले कोर्स ''यीशु जो स्वर्ग में है'' के साथ ''नीचे देखता प्यार से'' वाला गीत आमतौर पर गाते थे। [7]''राज्य'' शब्द के लिए देखें 5:3, 19, 20; 6:10, 13. ''धर्म'' शब्द के लिए देखें 5:6, 10, 20; 6:1. [8]''इस रीति से प्रार्थना किया करो'' पाठ में ''नमूने की प्रार्थना'' में इस्तेमाल ''राज्य'' शब्द पर चर्चा देखेंगे। [9]इसमें प्रभु की कलीसिया शामिल है। [10]हेरल्ड फाउलवर, *मैथ्यू 1,* बाइबल स्टडी टैक्सटबुक सीरीज़ (जौप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1968), 388.

[11]इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रभु हमारे किसी प्रयास के बिना हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्मति करता है। [12]मत्ती 6 अध्याय में पहले धन (''माया''; KJV) को व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है (आयत 24)। आयत 34 में भविष्य (''कल'') को व्यक्ति बताया गया है। [13]अनुवादित शब्द ''दुख'' (*kakos*) का अर्थ ''बुरा'' (KJV) है। यहां 6:34 में इसका अर्थ उसके लिए है *जो हमें बुरा लगता है*। [14]आर्किबल्ड थॉमस राबर्टसन, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 1 (नैशविल्ले: ब्राडमैन प्रैस, 1930), 59. [15]विलियम बार्कले, *दि गॉस्पल ऑफ मैथ्यू,* अंक 1, संशो संस्क, दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 258 में उद्धृत। [16]वाल्टर बी. नाइट, *नाइट'स ट्रेज़री ऑफ़ इलस्ट्रेशंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस, 1963), 445. [17]मैक्सी डी. डन्नम, *दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री: गलेशियंस, इफिसियंस, कोलोशियंस, फिलेमोन,* संपा. लायड जे. ओगिल्वी (वाको, टैक्सस: वर्ल्ड बुक्स, 1982), 322 में उद्धृत। [18]''एक बार में एक दिन'' नामक गीत का इस्तेमाल उदाहरण के रूप में किया जा सकता है। [19]डेल क्रेनजी, *हाउ टू स्टॉप वरिंग एण्ड स्टार्ट लिविंग* (न्यू यार्क: सिमन एण्ड सुसतर, 1948), 2. [20]क्रिस स्टिनेट, ईस्टसाइड चर्च ऑफ क्राइस्ट, मिडवेस्ट, ओक्लाहोमा, अगस्त 10, 2005 को दिया गया सबक।

[21]http://www.brainyquote.com/quotes/authors/a/abraham_lincoln.html. [22]हमारे यहां, ''बेवफ़ाई'' शब्द का अर्थ मुख्यतया अपने पति या अपनी पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध में *बेईमान* होने के सम्बन्ध में किया जाता है। इस शब्द का अर्थ मुख्यतया ''विश्वास नहीं'' है। [23]पाउलर, 387. [24]राबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएटस: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 61. [25]नाइट 445.